अरहर की खेती

प्रजातियाँ

अगेती प्रजातियां

क्र. सं	प्रजातियां	पकने की अवधि	उपज (कु./ हे.)
1.	पारस	130-140	18-20
2.	उपास-120	130-135	16-20
3.	पूसा-992	150-160	16-20
4.	टाइप-21	160-170	16-20

देर से पकाने वाली प्रजातियां

क्र. सं	प्रजातियां	पकने की अवधि	उपज (कु./ हे.)
1.	बहार	250-260	25-30
2.	अमर	260-270	25-30
3.	नरेंद्र अरहर-1	260-270	25-30
4.	आजाद	260-270	25-30
5.	पूसा-9	260-270	25-30
6.	मालवीय विकास	250-270	25-30
7.	मालवीय चमत्कार	230-250	30-32

खेत की तैयारी

- दोमट या बलुई दोमट भूमि उप्युक्त,
- जल निकास का उचित प्रबंध
- पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से
- दो-तीन जुताइयां, देशी हल या कल्टीवेटर
- समतल खेत

बीज की मात्रा एवं बुवाई

- जल्दी पकने वाली प्रजातियों की बुवाई जून के प्रथम सप्ताह में
- देर से पकने वाली प्रजातियों की बुवाई जुलाई के प्रथम सप्ताह में

बीज दर :

जल्दी पकने वाली प्रजातियां

- 15-20 किलोग्राम / हेक्टेयर

देर से पकने वाली प्रजातियां

- 12-15 किलोग्राम / हेक्टेयर

जल्दी पकने वाली प्रजातियों में -

- लाइन से लाइन की दूरी 45 सेंटीमीटर
- पौधे से पौधे की दूरी 20 सेंटीमीटर

देर से पकने वाली प्रजातियों में -

- लाइन से लाइन 60 सेंटीमीटर
- पौधे से पौधे की दूरी 30 सेंटीमीटर

बीज शोधन :

- 2 ग्राम थीरम या 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम से प्रति किलोग्राम बीज
- राइजोबियम कल्चर के एक पैकेट से 10 किलोग्राम बीज

खाद एवं उर्वरक

उर्वरक :

- 10-15 किलोग्राम नत्रजन / हेक्टेयर
- 40-45 किलोग्राम फास्फोरस / हेक्टेयर
- 20 किलोग्राम सल्फर / हेक्टेयर

- नत्रजन की आधी मात्रा फास्फोरस तथा सल्फर की पूरी मात्रा खेत की तैयारी के समय
- शेष आधी नत्रजन की मात्रा बुवाई के 25-30 दिन बाद टॉपड्रेसिंग के रूप में

सिचाई

- फलियां बनते समय खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए
- पाले से बचाव के लिए दिसम्बर या जनवरी माह में सिचाई करना लाभदायक

खरपतवार नियंत्रण

- बुवाई के एक माह के अंदर एक निराई-गुड़ाई
- दूसरी निराई पहली के 20 दिन बाद
- पेन्डामेथलीन 30 ई.सी. की 3.3 लीटर या एलाक्लोर 50 ई.सी. की 4 लीटर मात्रा

रोग नियंत्रण

- उकठा रोग
- बाँझा रोग
- सूत्रकृमि

उकठा रोग:

- रोग फ्यूजेरियम नामक कवक से
- पौधो में पानी व खाद्य पदार्थ के संचार को प्रभावित करता है
- पत्तियां पीली पड़कर सूख जाती है कुछ समय बाद पूरा पौधा सूख जाता है।
- जड़ से लेकर तने की ऊचाई तक काले रंग की धारियां दिखाई पड़ती है

नियंत्रण :

- जिस खेत में उकठा का प्रकोप अधिक हो, उस खेत में 3-4 साल तक अरहर की फसल नहीं बोना चाहिए।
- बुवाई से पहले 2 ग्राम थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करें

अरहर का बाँझा रोग :

- ग्रसित पौधों में पत्तियां अधिक लगती है।
- रोग ग्रसित पौधों में फूल नहीं आते जिसके कारण फलियां नहीं बनती है।
- पत्तियां छोटी तथा हल्के रंग की हो जाती है।

नियंत्रण :

- यह रोग माइट के द्वारा फैलता है।
- इनके नियंत्रण के लिए जिस खेत में अरहर बोना हो उसके आसपास अरहर के पुराने एवं स्वयं उगे पौधो को नष्ट कर देना चाहिए।

सूत्रकृमि :

- गर्मी की गहरी जुताई आवश्यक
- रोकथाम के लिए 50 किलोग्राम निवोली 5%, प्रति हेक्टर

कीट नियंत्रण

- फली बेधक कीट
- पत्ती लपेटक
- अरहर की फली मक्खी

फली बेधक कीट :

- गिडारे फलियों के अंदर घुसकर हानि पहुँचाती है

नियंत्रण :

- मोनोक्रोटोफॉस 36 ई.सी. की 1 लीटर मात्रा अथवा फेनवेलरेट 20 ई.सी. 750 मिलीलीटर मात्रा प्रति हेक्टेयर

पत्ती लपेटक कीट :

- सूंडियां पीले रंग की होती है
- पत्तियों को लपेटकर खाती है
- फूलो एवं फलियों को भी नुकसान

नियंत्रण :

- मोनोक्रोटोफॉस 36 ई. सी. की 800 मिलीलीटर मात्रा प्रति हेक्टेयर

अरहर की फली मक्खी :

- फली के अंदर दाने को खाकर हानि

नियंत्रण :

- मोनोक्रोटोफॉस 36 ई.सी. अथवा डाइमिथोएट की 30 ई.सी. की 1 लीटर मात्रा प्रति हेक्टेयर

कटाई एवं उपज

जल्दी पकने वाली प्रजातियों से

- 18-20 कुंतल प्रति हेक्टेयर

देर से पकने वाली प्रजातियों से

- 25-30 कुंतल प्रति हेक्टेयर